''मेरठ मंडल के प्राथमिक स्तर पर कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों, विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।''

कमोद कुमार
शोध छात्र
स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ

सारांश

शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने और प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की भूमिका को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से मेरठ मंडल में बीटीसी प्रशिक्षित शिक्षक, विशिष्ट बीटीसी प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की नियुक्ति और समायोजन किया गया है। यह शोध पत्र मेरठ मंडल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत इन तीनों श्रेणियों के शिक्षकों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन में शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता, प्रशिक्षण प्रक्रिया, कार्यक्षमता, शिक्षण पद्धतियों, वेतन संरचना, पदोन्नति के अवसर, तथा उनके कार्यभार और शिक्षण प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। शोध में प्राथमिक विद्यालयों के प्रशासन, छात्रों के सीखने की प्रक्रिया एवं शिक्षकों के कार्य संतोष पर भी विचार किया गया है। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि बीटीसी और विशिष्ट बीटीसी प्रशिक्षित शिक्षक औपचारिक प्रशिक्षण प्रक्रिया से गुजरने के कारण शिक्षण विधियों में अधिक दक्ष हैं, जबकि शिक्षामित्र अपने अनुभव और स्थानीय समाज से घनिष्ठ संबंधों के कारण कक्षा प्रबंधन में प्रभावी भूमिका निभाते हैं। समायोजन प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियाँ, प्रशासनिक बाधाएँ, और नीति–निर्माण की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, यह शोध शिक्षकों के बेहतर उपयोग और समायोजन के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान करता है।

मुख्य शब्द : बीटीसी प्रशिक्षित शिक्षक, विशिष्ट बीटीसी, शिक्षामित्र, समायोजन, तुलनात्मक अध्ययन, मेरठ मंडल, प्राथमिक शिक्षा

प्रस्तावना

शिक्षा ज्ञान का वह अमूल्य अस्त्र है जो अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, जिससे सभ्यताएँ बनती हैं, संस्कृतियाँ परवान चढ़ती हैं व इतिहास लिखे जाते हैं। शिक्षा दर्शन है व सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। इसीलिए शिक्षा को विकास के एक मापदण्ड के रूप में पहचाना जाने लगा है। जो राष्ट्र पढ़ता है वही आगे बढ़ता है। किसी भी समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर होना है तो शिक्षा को ही माध्यम बनाना पड़ेगा। शिक्षा ही मात्र ऐसा साधन है जिसके सहारे व्यक्ति और समाज में चेतना जागृत कर उसकी कार्य क्षमता में वृद्धि की जा सकती है। शिक्षा का अर्थ है, ''व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास''। वर्तमान समय में शिक्षा की अवधारणा बदल गई है। शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है, अतः हम सबको अपने क्षेत्र में जीवनपर्यन्त कर्त्तव्य है कि वह अपने गाँव व समाज में रहने वाले व्यक्तियों को इस प्रकार शिक्षा दे कि वे अपनी आवश्यकताओं पर आधारित विकास करते रहे तथा इससे शक्ति, सद्भाव और सामाजिक न्याय को बल मिलता रहे। आज दुनिया में हमारा वर्तमान समाज परिवर्तन व विकास के एक बहुत ही महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। ऐसे में अध्यापक का उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि एक अध्यापक ही वह व्यक्ति है जो देश के भावी नागरिकों के सम्पर्क में आता है और अपने आचार–विचार तथा व्यवहार से उन्हें प्रभावित भी करता है। यह बात सर्वविदित है कि

एक अध्यापक के कंधों पर राष्ट्र के भविष्य के निर्माण करने का उत्तरदायित्व होता है। सामाजिक, आर्थिक व राष्ट्रीय विकास का सूत्रधार भी अध्यापक ही होता है। एक अध्यापक ही वह व्यक्ति है जो समाज की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, आदर्शो व मूल्य आदि को वास्तविक रूप देने की जिम्मेदारी वहन कर सकता है। वास्तविक रूप में अध्यापकगण ही अपने प्रयासों से भावी समाज का निर्माण करते हैं। इसीलिए समाज में अध्यापकों का विशेष दर्जा होना चाहिए तथा सरकार को भी अध्यापकों के प्रति उपेक्षित भाव नहीं रखना चाहिए। अनेक बार विभिन्न विद्वानों ने अध्यापकों को राष्ट्र निर्माण बढ़ाया है।

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् देश को जनसंख्या परिवर्तन तथा अन्य सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा और ऐसे में शिक्षा की माँग और बढ़ी। ऐसे समय में सरकार द्वारा विभिन्न आयोगों की स्थापना की गई और उन आयोगों द्वारा शिक्षा व शिक्षकों के सभी पहलुओं का अध्ययन किया गया और सभी का निष्कर्ष यही निकला कि शिक्षक शिक्षा जगत की एक बहुत ही महत्वपूर्ण कड़ी है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। शिक्षा में सुधार लाने से पहले शिक्षक–प्रशिक्षक व शिक्षकों के रहन–सहन, खान–पान, दैनिक दिनचर्या, सामाजिक, आर्थिक व पारिवारिक स्थिति में सुधार लाना होगा क्योंकि जब तक मनुष्य के भावात्मक पक्षों का सही से विकास नहीं किया जाता तब तक उस व्यक्ति द्वारा उपयुक्त निष्पत्ति प्राप्त नहीं की जा सकती। यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का एकमात्र विकल्प शिक्षा है। शिक्षा के माध्यम से ही किसी राष्ट्र को विकसित, क्रियाशील व समृद्धिशाली बनाया जा सकता है। शिक्षा की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि कोई भी बालक/बालिका निरक्षर न रहे और ऐसी शिक्षा व्यवस्था के लिए ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता पड़ेगी जिनमें शिक्षण योग्यता के साथ–साथ अपने व्यवसाय से संतुष्टि हो व व्यवसाय की कार्यदशाओं से समायोजन तथा कार्य जिम्मेदारी से निवर्हन करने की क्षमता हो।

अध्यापक के विषय में **चार्ल्स लैम्ब** ने कहा है, ''वह जागरुक है परन्तु अपने समस्त समाज में उसका अपना कोई स्थान नहीं है, वह छोटे बच्चों के बीच गुलीवर की तरह आता है और वह अपने अवबोध को आप तक नहीं पहुँचा सकता। वह चौराहे पर आपसे नहीं मिल सकता। वह अध्ययन में इतना व्यस्त है कि आपको भी पढ़ाना चाहेगा।'' इससे अध्यापक के कार्य की गरिमा और उसकी अपेक्षा दोनों का आभास होता है।

आज की परिस्थितियाँ बदल गयी हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि शासन तथा प्रबन्धकारिणी के दो पाटों में पिसते अध्यापक के प्रति शासन तथा समुदाय अपना दृष्टिकोण बदलें। शासन का कर्त्तव्य है कि वह शिक्षा का राष्ट्रीयकरण करे। इससे सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि समुदाय द्वारा उत्पन्न अनेक समस्याओं का अंत हो जायेगा और समानता का भाव विकसित होगा। शिक्षा की घोषित राष्ट्रीय नीति में परिवर्तन कर उसे राष्ट्र के अनुकूल बनाया जाये तथा शिक्षा को दलगत राजनीति से परे रखा जाये। क्योंकि वह तात्कालिक लाभ की बजाय भावी समाज का निर्माण करने में सफलता प्राप्त करेगी।

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की व्यवहारिक परिभाषा -

मेरठ मंडल– मेरठ मंडल से तात्पर्य पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक क्षेत्र जिसके अन्तर्गत मेरठ, बुलन्दशहर, बागपत, गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर तथा हापुड़ छः जनपद आते हैं, से है।

प्राथमिक स्तर– प्राथमिक स्तर से तात्पर्य उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित परिषदीय विद्यालयों से है। जिसके अन्तर्गत कक्षा एक से कक्षा पाँच तक की शिक्षा प्रदान करने वाले सरकारी विद्यालय आते हैं।

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक– बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का अभिप्राय उन शिक्षकों से हैं जो बेसिक टीचर सर्टिफिकेट प्रशिक्षण प्राप्त कर प्राथमिक स्तर पर शिक्षण हेतु सरकार द्वारा नियुक्त किये गये हैं।

विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक– विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का अभिप्राय उन शिक्षकों से है जो बी0एड0/बी0पी0एड0/एल0टी0 के प्रशिक्षण के उपरान्त सरकार द्वारा छः माह का विशिष्ट प्रशिक्षण प्रदान कर प्राथमिक विद्यालयों मतें नियमित शिक्षक के रूप में नियुक्त किये गये हैं।

शिक्षामित्र– शिक्षामित्र का अभिप्राय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत उन शिक्षकों से हैं जो ग्राम शिक्षा समिति/नगर शिक्षा समिति के प्रस्ताव के उपरान्त जिला स्तरीय समिति द्वारा अनुमोदन किये जाने के पश्चात् नियुक्त किये गये थे। जिनकी योग्यता इंटरमीडिएट थी तथा अस्थायी रूप से कक्षा एक एवं दो में शिक्षण में सहायता के लिये निर्धारित मानदेय पर नियुक्त किये गये थे तथा वर्तमान में सरकार द्वारा नियमित शिक्षक के रूप में स्थायी शिक्षक के रूप में समायोजित किया जा रहा है।

समायोजन स्तर– समायोजन परिस्थितिजन्य एक ऐसा सामंजस्य है जिससे व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन करके परिस्थितियों के साथ अपना उचित व संतोषजनक सामंजस्य स्थापित करता है। और जिस स्तर तक व्यक्ति सामंजस्य स्थापित कर पाता है वह उसका समायोजन स्तर कहलाता है।

अध्ययन के उद्देश्य– प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये -

1. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्टि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शिक्षामित्रो एवं बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ– शोध की परिकल्पनाएँ -

1. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रो के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. शिक्षामित्रो एवं बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. **शोध अभिकल्प-** प्रस्तुत शोध कार्य प्राथमिक स्तर पर कार्यरत बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों , विशिष्ट बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा शिक्षामित्रों पर किया जा रहा है । इस तरह वर्तमान शोध में तीन शिक्षक समूह है और इस प्रकार के समूह की प्रकृति स्थिर है । इस लिए प्रस्तुत शोध की प्रकृति के अनुसार उपरोक्त तीनो प्रकार के समूहों की तुलना के उददेश्य से वर्तमान शोध कार्य के लिए स्थिर समूह तुलना अभिकल्प का चयन किया गया है जो कि सर्वे शोध का एक भाग है ।

5. **शोध की जनसंख्या–** प्रस्तुत शोध में जनसंख्या अथवा समष्टि से आशय मेरठ मंडल के छः जनपदों में स्थित समस्त परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0 प्रक्षिक्षित शिक्षकों विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षार्मिन्नों से है। अर्थात पूरे मेरठ मंडल के परिषदीय प्राथमिक शिक्षक प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत आते हैं।

शोध का न्यादर्श– प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश के मेरठ मण्डल के अन्तर्गत आने वाले छः जनपदों बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों पर आधारित है। मेरठ मंडल ऐतिहासिक स्थल है और उत्तर प्रदेश का विकसित मंडल माना जाता है। मंडल में प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की स्थिति जानना आवश्यक है। क्योंकि विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या अधिक है। इसलिये शोधकर्ता ने अपने शोध की जनसंख्या का स्वरूप को ध्यान में रखते हुए न्यादर्श प्राप्त करने हेतु सामान्य यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया है। इसमें विद्यालयों का चयन लॉटरी विधि से तथा शिक्षकों का चयन यादृच्छिकीय विधि से किया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :– न्यादर्श की ईकाईयों के समायोजन को ज्ञात करने के लिए एस0 के0 मंगल द्वारा निर्मित एवं प्रमाणिकृत मंगल टीचर्स एडजस्टमेन्ट इनवेन्टरी का प्रयोग किया गया है ।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीकियाँ– प्रस्तुत शोध में चरों के मापन के लिये मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया। परिक्षणों के द्वारा प्राप्त आँकड़ों को सारणी के रूप में तैयार किया गया उसके यदि विभिन्न वर्गों में विभाजित करके एकत्रित आँकड़ों का माध्य एवं मानक विचलन ज्ञात किया गया तथा परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु न परीक्षण का प्रयोग किया गया है। माध्य व मानक विचलन व टी परीक्षण का विवरण निम्नवत है–

माध्य– माध्य सम्पूर्ण श्रेणी का प्रतिनिधित्व करने वाला सामान्य औसत मान है। शोध में माध्य ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित सूत्र प्रयोग किया गया है–

$$m = A.M. + \frac{\sum fx}{N} xi$$

प्रमाणिक विचलन– प्रसरण ज्ञान करने हेतु प्रमाणिक विचलन का प्रयोग किया जाता है। प्रमाणिक विचलन माध्य से लिये गये विचलनों के वर्ग के माध्य का वर्गमूल होता है। प्रमाणिक विचलन की गणना हेतु निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है–

$$S.D. = ci \frac{\sqrt{\left[N \sum fd^2 - (\sum fd)^2\right]}}{N}$$

t परीक्षण– दो मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच t परीक्षण द्वारा की जाती है। t परीक्षण का सूत्र निम्नवत है–

$$t = \frac{(m_1 - m_2)}{\sqrt{\frac{6_1^{\,2}}{N_1} + \frac{6_2^{\,2}}{N_2}}}$$

बी0टी0सी0, विशिष्ट बी0टी0सी0–प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन–

समायोजन स्तर के कारक	शिक्षको की स्थिति	शिक्षकों की संख्या	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक			विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक			शिक्षमित्र		
			औसतमान	प्रमाणिक विचलन	समायोजन स्तर	औसतमान	प्रमाणिक विचलन	समायोजन स्तर	औसतमान	प्रमाणिक विचलन	समायोजन स्तर
संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य वातावरण के	ग्रा0पु0	90	90.12	4.25	अच्छा	82.93	10.87	अच्छा	71.7	2.64	औसत
	ग्रा0महि0	50	90.24	4.78	अच्छा	74.96	2.35	औसत	71.54	2.73	औसत
	श0पु0	60	90.2	4.45	अच्छा	85.15	10.04	अच्छा	71.52	2.67	औसत
	श0महि0	40	90.9	3.90	अच्छा	75.35	1.99	औसत	71.62	2.62	औसत
समाज शारीरिक समायोजन	ग्रा0पु0	90	114.8	7.30	औसत	119.2	12.29	औसत	143.8	4.25	अच्छा
	ग्रा0महि0	50	113.66	7.62	औसत	150.2	4.66	अच्छा	143.68	4.28	अच्छा
	श0पु0	60	112.85	7.46	औसत	115.95	10.52	औसत	143.67	4.29	अच्छा
	श0महि0	40	114.5	7.39	औसत	151.1	4.99	अच्छा	143.4	4.28	अच्छा
व्यावसायिक समायोजन	ग्रा0पु0	90	77.72	8.59	औसत	78.56	7.42	औसत	77.5	4.26	औसत
	ग्रा0महि0	50	79.12	8.49	औसत	84.6	2.52	औसत	77.44	4.18	औसत
	श0पु0	60	78.7	8.53	औसत	78.13	8.23	औसत	77.36	4.30	औसत
	श0महि0	40	77.03	8.69	औसत	84.88	2.39	औसत	77.25	4.43	औसत
वैयक्तिक समायोजन	ग्रा0पु0	90	110.09	5.53	औसत	111.7	5.13	औसत	108.6	2.68	औसत
	ग्रा0महि0	50	111.03	5.19	औसत	113.8	1.91	औसत	108.88	2.65	औसत
	श0पु0	60	111.03	5.26	औसत	112.25	5.62	औसत	108.87	2.69	औसत
	श0महि0	40	111.08	4.85	औसत	113.98	1.86	औसत	108.9	2.71	औसत
आर्थिक समायोजन और व्यावसायिक संतुष्टि	ग्रा0पु0	90	69	4.49	अच्छा	63.02	8.47	अच्छा	53.49	2.99	औसत
	ग्रा0महि0	50	140	4.27	बहुत अच्छा	54.56	1.86	औसत	53.84	3.07	औसत
	श0पु0	60	69.95	4.44	अच्छा	64.65	8.00	अच्छा	53.63	3.02	औसत
	श0महि0	40	69.13	4.49	अच्छा	54.43	2.05	औसत	53.25	3.09	औसत

विश्लेषण

उपरोक्त सारणी के माध्यम से अध्ययनकर्ता ने बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों, विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों के समायोजन स्तर का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जिसमें समायोजन के पाँच कारकों पर ग्रामीण महिला एवं पुरूष और शहरी महिला एवं पुरूष के समायोजन स्तर का अध्ययन किया गया। जिसमें संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य वातावरण से समायोजन पर ग्रामीण एवं शहरी महिला व पुरूष बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन का स्तर अच्छा था। विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (ग्रामीण एवं शहरी पुरूष) का अच्छा तथा ग्रामीण एवं शहरी महिला का औसत था। लेकिन शिक्षामित्रों का (ग्रामीण एवं शहरी पुरूष एवं महिला) का औसत था। समाज मनो–शारीरिक समायोजन पर बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (ग्रामीण एवं शहरी पुरूष एवं महिला) का समायोजन का स्तर औसत था। विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (ग्रामीण एवं शहरी महिला) का अच्छा तथा ग्रामीण एवं शहरी पुरूष का औसत था। ग्रामीण शहरी पुरूष एवं महिला शिक्षार्थियों का अच्छा था। व्यावसायिक समायोजन पर ग्रामीण शहरी पुरूष एवं महिला बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों का औसत था। इसी तरह वैयक्तिक समायोजन पर ग्रामीण, शहरी पुरूष एवं महिला बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों, विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों का औसत था। आर्थिक समायोजन एवं व्यवस्था संतुष्टि ग्रामीण महिला बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का बहुत अच्छा तथा शेष ग्रामीण पुरूष, शहरी पुरूष एवं महिला का अच्छा था। ग्रामीण व शहरी विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का अच्छा तथा ग्रामीण एवं शहरी महिला का औसत था। तथा ग्रामीण, शहरी पुरूष एवं महिला शिक्षामित्रों का औसत पाया गया।

शोध के निष्कर्ष – शोध के उद्देश्यों के परिणाम लेखन के पश्चात शोध निष्कर्ष लिखा जाता है प्रस्तुत शोध निष्कर्ष निमंलिखित ळे –

- बी० टी० सी० प्रशिक्षित शिक्षको एव विशिष्ट बी० टी० सी ० प्रशिक्षित शिक्षको के समायोजन स्तर मे सार्थक अन्तेर है वास्तव मे बी० टी० सी० प्रशिक्षित शिक्षको की तुलना मे विशिष्ट बी० टी० सी० प्रशिक्षित शिक्षको का समायोजन स्तर अच्छा है ।
- विशिष्ट बी० टी० सी ० प्रशिक्षित शिक्षको एव शिक्षा मित्रो के समायोजन स्तर मे सार्थक अन्तर है। वास्तव मे शिक्षामित्रो की तुलना मे विशिष्ट बी० टी० सी० प्रशिक्षित शिक्षको का समायोजन स्तर अच्छा है ।

- शिक्षामित्रो एव बी० टी० सी० प्रशिक्षित शिक्षको के समायोजन स्तर मे सार्थक अंतर है। वास्तव मे शिक्षामित्रो की तुलना मे बी०टी०सी० प्रशिक्षित शिक्षको का समायोजन स्तर अच्छा है।

  अत उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि बी० टी० सी० प्रशिक्षित शिक्षको , विशिष्ट बी० टी० सी० प्रशिक्षित शिक्षको एव शिक्षामित्रो की व्यावसायिक सतुष्टि संतोषजनक है जबकि बी० टी० सी० प्रशिक्षित शिक्षको एव विशिष्ट बी० टी० सी० प्रशिक्षित शिक्षको का समायोजन स्तर शिक्षामित्रो से अधिक अच्छा है । इस शोध से सरकार द्वारा चलायी जा रही विशिष्ट बी० टी० सी० प्रशिक्षण योजना को बल मिलता तथा शिक्षामित्रो का नियमित शिक्षक के रूप मे समायोजन पर अभी और विचार करने की आवश्यकता है

शैक्षिक उपयोगिता– वर्तमान शाध प्राथमिक स्तर के शिक्षकों पर किया गया है । इस शोध कार्य की उपयोगिता शिक्षा जगत के लिए बहुत अहम है क्योकि प्राथमिक शिक्षा आगे की सम्पूर्ण शिक्षा की नींव का काम करती है इसलिए प्राथमिक शिक्षा का मजबूत होना नितान्त आवश्यक है । प्राथमिक स्तर की शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका और भी बढ जाती है । यह शोध समाज के लिए बहुत उपयोगी है क्योकि यदि अच्छे शिक्षक होगें तो अच्छी शिक्षा बच्चों को मिलेगी और अच्छे समाज का निर्माण होगा यह शोध सरकार की दृष्टि से भी बहुत उपयोगी है क्योकि यह शोध सरकार के लिए अच्छे शिक्षकों की नियुक्ति का मार्ग प्रशस्त्र करता है इस शोध का विद्यालय प्रशासन के लिए भी महत्व है क्योकि इससे शिक्षकों की योग्यतानुसार शिक्षकों के दायित्व का निर्धारण होता है ।

Bibliography (सन्दर्भ - ग्रन्थ सूची)

1. सक्सैना , एन० ए० , मिश्रा , बी० के और मोहंती , आए० के० दृ अध्यापक शिक्षा मेरठ , 2011.(142–154)
2. वर्मा , जी० एस० , भारत मे शिक्षा का विकास , इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस , मेरठ , 2003. (275–352)
3. मल्होत्रा , पारख एव मिश्र दृ भारत मे विद्यालयी शिक्षा NCERT , दिल्ली 1986.(127–136) .
4. भटनागर , सुरेश एव कुमार संजय , भारत मे शिक्षा का विकास आर० लाल० , मेरठ 2009 . (331–382) .
5. देव एव दस , मानव अधिकार NCERT दिल्ली 1998
6. कुमार राजेंद्र , विधालय संगठन , इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ , 2003 (36–42) .
7. वशिष्ठ , के ० के० , विद्यालय संगठन एव भारतीय शिक्षा की समस्याए , इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस , मेरठ 2004 , (68–91) .
8. भटनागर , सुरेश , भारत मे शिक्षा का विकास , सूर्य पब्लिशिंग हाउस , मेरठ 2005. (120–132).
9. सिंह , आर० पी० , बाल विकास के मनोवैज्ञानिक आधार , विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा (53–63) .
10. ओबराय , एस० सी० , शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन एव परामर्श , इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ 2004, (128–159) .
11. NCERT , प्राथमिकशाला शिक्षक के लिए मनोविज्ञान 1993, (344–355) .
12. शर्मा , डी०एल० , आधुनिक भारतीय समाज मे शिक्षा विनय रखेजा , मेरठ 2011 . (75–89) .
13. भटनागर , आर० पी० , शिक्षा अनुसन्धान , इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस , मेरठ 2003 . (411–425) .
14. शर्मा , आर० ए० , तुलनात्मक शिक्षा , विनय रखेजा , मेरठ 2011 . (254–291) .
15. मदान , पूनम , उदीयमान भारतीय समाज मे शिक्षक , अग्रवाल पब्लिशिंग आगरा 2013 , (427–434)
16. मदान , पूनम एव धर्मेन्द्र कुमार , समसामयिक भारत और शिक्षा , अग्रवाल पब्लिकेशन , आगरा 2015–16 (204–211) .
17. अग्रवाल , विद्या और भटनागर , आर० पी० , शैक्षिक प्रशासन , इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ 2002 , (258–316) .
18. त्यागी , गुरुसरन दास , भारत मे शिक्षा का विकास , विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा 2004–05(473–490) .
19. कुमारी विनोद , शिक्षक , शिक्षण एव तकनीकी , ठाकुर पब्लिशिंग हाउस लखनऊ 2016 . (304–344)
20. भास्कर , सुरेन्द्र एव विश्नोई , सीमा , अधिगमकरता का विकास ठाकुर पब्लिशिंग हाउस , लखनऊ 2016(102–104) .